[Shri S. K. Patil]

But the request which I will again make for the proper vigilance of our long railway line is, after having retired to your constituencies, in consultation with the Members of the State Legislatures and other people too—I am not restricting it to Members of the Legislature—you should so arrange that for all the 24 hours every inch of railway line is kept under vigilance so that it will not be possible for any infiltrator, no matter whether he is a paratrooper or any other kind of person to tamper with the railway lines and thereby affect the safety of the railways.

Certain other suggestions have been made. I hope Members will excuse me if I do not refer to all of them. Extension of new lines has got to be done, as also extension of some stations. These are very important—I can understand it and I am not ridiculing it. But just at present we have to concentrate every grain on our energy on the main task and only task of winning this war, and on this I think the railways are and will do their best. I do not want to take any more of your time except to ask Members to approve of these.

श्री ब्रज बिहारी मेहरोत्रा : चित्तरंजन में टैंक बनाने के सुझाव के बारे में मंत्री महोदय का क्या विचार है ?

Shri S. K. Patil: I have not examined its technical possibility. If tanks could be made in place of railway locomotives it can be done. Surely, that is a suggestion for our earnest consideration.

Shri Priya Gupta: What about subsidized ration?

Shri S. K. Patil: Subsidized ration does not require any excess grant.

Shri Priya Gupta: But why is it mentioned in the preamble?

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That the respective excess sums not exceeding the amounts shown in the third column of the Order Paper be granted to the President to make good the amounts spent during the year ended 31st day of March, 1963, in respect of the following demands entered in the second column thereof:

Demands Nos. 3, 7, 17, 18 and 20."

The motion was adopted.

15.48 hrs.

*DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS (RAILWAYS), 1965-66

DEMAND NO. 2—MISCELLANEOUS RAILWAY EXPENDITURE

Mr. Deputy Speaker: Motion moved:

"That a supplementary sum not exceeding Rs. 1000 be granted to the President to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Miscellaneous Railway Expenditure'."

DEMAND NO. 14—CONSTRUCTION OF NEW LINES

Mr. Deputy Speaker: Motion moved:

"That a supplementary sum not exceeding Rs. 1000 be granted to the President to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Construction of New Lines'."

DEMAND NO. 15—OPEN LINE WORKS-CAPITAL, DEPRECIATION RESERVE FUND AND DEVELOPMENT FUND.

Mr. Deputy Speaker: Motion moved:

"That a supplementary sum not exceeding Rs. 1000 be granted to

*Moved with the recommendation of the President.

the President to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1966, in respect of 'Open Line Works-Capital, Depreciation Reserve Fund and Development Fund'."

Mr. Deputy-Speaker: These Demands are now before the House. Does the hon. Minister want to say anything?

The Minister of Railways (Shri S. K. Patil): No. These are merely token grants.

Mr. Deputy-Speaker: Are there any cut motions which are being moved? I find none.

श्री उ० मू० त्रिवेदी (मंदसौर) : उपाध्यक्ष महोदय, जैसा कि अभी हमारे मन्त्री साहब ने कहा है, ये तो टोकन ग्रान्ट हैं। और हैं भी कितनी ?—तीन हजार रुपये । इसमें झगड़ा क्या ? जब करोड़ों रुपये खर्च करते हैं, तो तीन हजार की क्या बात करनी है ? कुछ हद तक मन्त्री महोदय सही हो सकते हैं लेकिन जिस सिद्धान्त पर ये तीन हजार रुपये, खर्च किये जा रहे हैं, मैं उस सिद्धान्त के बारे में कुछ कहना चाहता हूं । डिमाण्ड नम्बर 2 मद्रास से विजयवाड़ा तक इलक्ट्रिफ़िकेशन के बारे में है । इसमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती है । इसी तरह डिमांड नम्बर 14 में जो मांग की जा रही है, उसमें भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती है । न डिमाण्ड नम्बर 15 के बारे में कोई आपत्ति हो सकती है । हर एक आदमी आज यह समझता है कि हमारे देश की उन्नति हमारी रेलों की उन्नति पर निर्भर करती है, हमारी रेलों की उन्नति, हमारे देश की उन्नति है । यह ठीक बात है कि अगर रेलें सुचारु रूप से चलाई जायें तो हम आज जिस समरांगण में उतरे हैं उस समरांगण में हमारी शक्ति को बढ़ाने में रेलें हमारी बहुत सहायता कर सकती हैं । जैसे तीन हजार रुपये आपने कर दिये हैं वैसे ही पन्द्रह हजार अगर आप कर देते हैं और इसमें बारह और स्कीम्ज को मिला देते तो अति उत्तम होता ।

मैं कई बार कह चुका हूं कि हमारे यहां रेलवे बोर्ड जो है, उसमें एक ऐसा सिद्धान्त मान लिया गया है कि हमारे मिनिस्टर कुछ समझते नहीं हैं और रेलवे बोर्ड के जो अफसर हैं वे सारी बात समझते हैं । इस वास्ते वे हमारे रेलवे मिनिस्टरों की तरफ तवज्जह नहीं देते हैं । वे यों समझते हैं कि ये आते और जाते रहते हैं । इनका उनके ऊपर कोई बोझा नहीं पड़ता है । बदकिस्मती से अभी इस समय इस लोक सभा में तीन मिनिस्टर बदल गए हैं । इसलिए वे यह समझते हैं कि रेलवे मिनिस्टर तो आते जाते रहते हैं, अपना जैसे ढकोसला चलता है, वैसे उसको चलाते जाओ । कोई अध्ययन की आवश्यकता उन्हें मालूम नहीं पड़ती है और न वे अध्ययन करते हैं । जो उनकी समझ में आता है उसको वे कर देते हैं ।

नक्शे की तरफ आप देखें । कांडला से सीधी लाइन ब्राड गेज की अहमदाबाद आई । अहमदाबाद से आज हम को मुश्किल यह होती है कि अहमदाबाद से बम्बई जाना हो तब तो रेल है लेकिन अगर अहमदाबाद से हमको सीधा दिल्ली की तरफ आना हो और सारा माल सामान ढोना हो तो हमको छोटी लाइन का आश्रय लेना पड़ेगा । तमाम राजस्थान का एरिया और गुजरात का वह भाग जहां छोटी छोटी लाइनें बनी हुई हैं, या जरा मीटर गेज बनी हुई है, उससे हमारा कोई सम्पर्क नहीं रहता है । अभी गोधरा से रतलाम तक का डबलिंग सन् 1953 से शुरू हुआ था और सन् 1960 में जाकर करीब-करीब खत्म हुआ । उसमें हमने ग्यारह करोड़ रुपये खर्च कर दिये । वह ऐसा क्षेत्र है कि जिसमें बस्ती नहीं है । उस क्षेत्र में पहाड़ हैं । सारी पहाड़ियां हम को तोड़नी पड़ी और पुराने स्टेशन जो क्रासिंग के वास्ते बनाए गए थे वे आज निरुपयोगी हमारे लिये हो गए हैं । इस सैक्शन के ऊपर दबाव बहुत अधिक था । हमको बड़ौदा से दिल्ली जाने में तकलीफ होती थी, बाटलनैक्स थे । आप नक्शे को देखेंगे तो

[श्री उ० मू० त्रिवेदी]

आपको मालूम पड़ेगा कि अहमदाबाद से सीधा कोटा को मिलाने के वास्ते और बगैर डबलिंग किए हुए एक नई लाइन खोलने की जरूरत है। अहमदाबाद से कांडला तक सामान लाने ले जाने के लिए आप लाइन खोल रहे हैं, ब्राड गेज बना रहे हैं, तो मीटर गेज तो पहले से ही है। आप अहमदाबाद के नक्शे को देखें। वहां से सीधे कपडवंज जाते हैं। वह बीस मील है। 18 मील लूणावाला हैड पड़ता है। लूणावाला से 18 मील बांसवाड़ा पड़ता है। बांसवाड़ा से 32 मील परतापगढ़ पड़ता है। परतापगढ़ से और एक लाइन आपने लटका रखी है जो सिर्फ बारह मील की है। उसको आप नहीं बना रहे हैं। मावली से बड़ी सादड़ी तक की लाइन यों ही लटकी पड़ी है। वह सीधे नीमच मिल सकती है। 1940 से कारेस-पोंडेंस मौजूद है, गवर्नमेंट आफ इंडिया की सैंकशन मौजूद है। तब से लेकर आज 1965 तक वह लाइन नीमच नहीं गई है। अगर ब्राड गेज की लाइन नीमच चली जाती और नीमच से सीधे कोटा लाइन चली जाती तो आज जो स्कीम चला रहे हैं सर्वे लाइन की 'चित्तौड़' से कोटा तक का सर्वे करने की वह आपको न करना पड़ता। तमाम अहमदाबाद से कोटा तक बड़ी लाइन आपको मिल जाती और आज हमारे ट्रैफिक के ऊपर जो बोझ पड़ता है वह बोझ हट जाता।

इसलिए मेरा यह सुझाव है कि जब हम अध्ययन करने लगें तब ऐसी लाइनों का भी अध्ययन हमें करना चाहिये जो हमें नक्शे में देखने से मालूम पड़े कि ये लाइनें भी हमारे लिए आवश्यक हैं और जिन को हम लाइफ लाइन्ज समझते हैं। बांसवाड़ा, परतापगढ़ के एरिया में सबसे अधिक खनिज पदार्थ पैदा होते हैं। वहां से उन खनिज पदार्थों को लाने में हमें बहुत दिक्कत उठानी पड़ रही है। उस एरिया में अनाज भी बहुत पैदा होता है। उसको ढोने में भी बड़ी मुश्किल पड़ती है। छोटी छोटी लाइनों के टुकड़े गुजरात के अन्दर पड़े हुए हैं, वे किसी काम के नहीं हैं, उनका कोई उपयोग नहीं हो रहा है। कभी कभी सोचते हैं कि उन लाइनों को बन्द कर दें क्योंकि रोड ट्रैफिक बढ़ गया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि जब यह सर्वे हो रहा है, हजार-हजार रुपया टोकन का लिया जा रहा है तो ऐसे सर्वे की तरफ भी हमारे मन्त्री महोदय का ध्यान जाना चाहिये, जिसकी ओर मैंने उनका ध्यान आकर्षित किया है।

श्री बाल्मीकी (खुर्जा) : मैं माननीय मंत्री जी, माननीय राज्य मंत्री जी और माननीय उपमंत्री जी, तीनों को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने ऐसे समय में जब कि हमारे ऊपर संकट है बड़े ही धैर्य और दक्षता का परिचय दिया है। चीन के आक्रमण से जो संकट हमारे सामने उपस्थित हुआ था वैसा ही संकट आज पाकिस्तान के बर्बरतापूर्ण आक्रमण के कारण उपस्थित हुआ है। जिस दक्षता का उन्होंने अब भी परिचय दिया है, उसकी मैं सराहना करता हूं। मैं मानता हूं कि आज रेलों का जो जाल सारे देश में बिछा हुआ है वह देश के लिए एक प्राणधारा के समान है। जिस तरह से जीवित रहने के लिए प्राणधारा और प्राण तंतुओं की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से देश की रक्षा करने के लिए रेलों का जाल बिछाना आवश्यक होता है और साथ ही साथ उनकी रक्षा करने की आवश्यकता होती है। इसका उत्तरदायित्व केवल रेल कर्मचारियों पर नहीं है बल्कि नागरिकों पर भी है। मैं यकीन दिलाना चाहता हूं कि बिना इस लिहाज के कि कोई सरकारी कर्मचारी पुलिसवाले या फौजी जवान या दूसरे भाई उसकी रक्षा करते हैं, एक एक नागरिक चाहे वह नगर का रहने वाला हो या ग्राम का, लाइनों पर उसी तरह से निगाह रखता है जिस तरह से अपनी जीवनधारा को बचाने के लिए वह प्रयत्नशील रहता है। उनकी रक्षा करने के लिये वह प्राण-पण से तत्पर है। यह बात बिलकुल स्वच्छ और साफ है कि आज जिस जागरूकता और उच्चता की अपेक्षा रेल विभाग से की जाती है

वह यहां छोटे से छोटे कर्मचारी से लेकर बड़े से बड़े अधिकरी में पाई जाती है। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी से लेकर चेयरमैन महोदय में समान रूप से पाई जाती है। सभी निष्ठा-पूर्वक देश की रक्षा के लिए तैयार हैं। यह भी बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आज हमारे रेलवे बोर्ड के जो चेयरमैन हैं वे अत्यन्त अनुभवी हैं और चतुर्थ श्रेणी से लेकर ऊपर की श्रेणी तक के लोगों के दुखदर्द को समझते हैं। उन सबकी विचारधारा को वे जानते हैं। उनके अनुभव से और मंत्री जी की दक्षता और विद्वता से जिस प्रकार का यहां कार्य चलेगा उससे देश को इस संकट के काल में बड़ी भारी सहायता मिलेगी।

मैं उस समय भी जब अतिरिक्त व्यय की मांगें चल रही थीं कहना चाहता था कि अति-रिक्त व्यय की ओर मंत्री महोदय का ध्यान जाना चाहिये, अतिरिक्त व्यय का कोई औचित्य होना चाहिये, कोई आवश्यकता होनी चाहिये। जब सारे दूसरे मंत्रालयों में, विभागों में बचत का क्रम चलता है तो यहां रेलों के अन्दर भी बचत का प्रभाव होना चाहिये, यहां भी वही क्रम चलना चाहिये। हमें बचत दिखाई देनी चाहिये। लेकिन मैं नहीं समझता हूं कि आज वह दिखाई दे रही है। इसलिए उधर ध्यान जाना बहुत आवश्यक है।

जहां तक पूरक मांग का सम्बन्ध है आपने सांकेतिक दृष्टि से ही यहां पर पूरक मांग पेश की है। बात मामूली सी है। मैं सांकेतिक मांग का समर्थन करता हूं। आज की संकटकी घड़ी में फौजी साज-सामान, फौजी जवानों को रेलों द्वारा और हवाई जहाजों द्वारा जो लाने ले जाने का काम है और जो बोझा आप के ऊपर पड़ा है, उसे मैं बोझा नहीं मानता हूं वह आपका उत्तरदायित्व है और उस उत्तरदायित्व को आपको निभाना है। इसी तरह से राष्ट्र की एकता कायम रह सकती है। हमारे मंत्री जी और खास कर पाटिल जी अपनी पटुता के लिए, अपनी विद्वता के लिए मशहूर हैं और मैं चाहता हूं कि इस काम को वह भली प्रकार निभाय और मुझे कोई सन्देह नहीं है कि वे इसको निभा-येंगे। सांकेतिक मांगों का ध्यान तो किया जाए, लेकिन सांकेतिक मांगों के साथ चालू वर्ष में आप काम भी जल्दी शुरू कर दें, चाहे वह सर्वेक्षण का काम हो या कोई दूसरा काम हो। सर्वेक्षण की दृष्टि से, विचारधारा की दृष्टि से, विचारों की दृष्टि से किस प्रकार आप व्यय करते हैं, चाहे वह नई लाइनों के लिए हो या किसी और बात के लिए, चाहे उस क्षेत्र के लिए हो जहां कि हमारे फौजी जवान लड़ रहे हैं या किसी दूसरे क्षेत्र के लिए, चाहे बोर्डर पर अपने कर्मचारियों को सहूलियत देने के लिए कोई कार्य हो या कोई दूसरा हो, इसका आपको पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये कि जितना धन आप चाहते हैं उसके लिए कोई कारण विशेष भी हमें बतायें और बतायें कि इसलिए आप उसको चालू करना चाहते हैं। मैं यह जरूर चाहता हूं कि विशेषकर वे क्षेत्र जो कि अग्रिम क्षेत्र हैं, जहां युद्ध चल रहा है, और जहां आपके स्टेशन हैं, उन स्टेशनों पर जो कर्मचारी काम करते हैं, चाहे वे चतुर्थ श्रेणी के हों या कोई और उनको युद्ध की स्थिति को ध्यान में रखते हुए आप हथियार दें। उनको हथियारों से सुसज्जित करें ताकि वह दुश्मन से लड़ सकें, दुश्मन से लोहा ले सकें और दुश्मन का मुकाबला कर सकें।

इन शब्दों के साथ मैं आप की पूरक मांगों का समर्थन करता हूं और यह जरूर समझता हूं कि ऐसे समय में जब कि देश पर युद्धकाल है, संकट है, रेलवे बलशाली ढंग से काम करेंगी और उनके काम के द्वारा देश को एक ऐसी जीत हासिल होगी, जिस का श्रेय रेलवे को भी जायेगा।

---

16 hrs.

DETENTION OF MEMBER

(*Shri Badrudduja*)

Mr. Deputy-Speaker: I have to inform the House that the Speaker has received the following communication,